सत्य है और कविता की सही चरम सार्थकता है । समय-समय पर बुद्धि और राग में थोड़ी बहुत प्रतियोगिता रही हो, यह दूसरी बात है, परन्तु कभी भी बुद्धि को राग के स्थान पर काव्य का प्राण-तत्व होने का सौभाग्य प्राप्त नहीं हुआ ।

(च) आदर्श हमारी दृष्टि की मलिन संकीर्णता धोकर उसे बिखरे यथार्थ के भीतर छिपे हुए सामंजस्य को देखने की शक्ति देता है, हमारी व्यष्टि में सीमित चेतना को, मुक्ति के पंख देकर समष्टि तक पहुँचने की दिशा देता है और हमारी खण्डित भावना को, अखण्ड जागृति देकर उसे जीवन की विविधता नाप लेने का वरदान देता है ।

2. निम्नलिखित में से किन्हीं **तीन** प्रश्नों के उत्तर दीजिए : **3×12=36**

(क) 'पथ के साथी' में वर्णित किसी एक साहित्यकार के व्यक्तित्व का विश्लेषण कीजिए ।

(ख) 'पथ के साथी' में चित्रित सुमित्रानंदन पंत का परिचय दीजिए ।

(ग) 'पथ के साथी' की गद्य-शैली पर प्रकाश डालिए ।

Roll No. ..... **Exam Code : J-21**

Subject Code—53603

M. A. EXAMINATION

(Reappear) (Batch 2017-2019 Onwards)

(Second Semester)

HINDI (Compulsory Subject)

Hi-108

आधुनिक गद्य साहित्य

Time : 3 *Hours* *Maximum Marks :* 80

नोट : सभी प्रश्न अनिवार्य हैं ।

1. निम्नलिखित गद्यांशों में से किन्हीं **तीन** की सप्रसंग व्याख्या कीजिए । प्रत्येक पुस्तक से एक की व्याख्या करना अनिवार्य है : **3×7=21**

(क) सावधान नंद ! तुम्हारी धर्मांधता से प्रेरित राजनीति आँधी की तरह चलेगी, उसमें नंद वंश समूल उखड़ेगा । नियति-सुंदरी के भवों में बल पड़ने लगा है । समय आ गया है, शूद्र राजसिंहासन से हटाए जाएँ और सच्चे क्षत्रिय मूर्धाभिषिक्त हों ।

(ख) मेरी आवश्यकताएँ परमात्मा की विभूति-प्रकृति पूरी करती हैं । उसके रहते दूसरों का शासन कैसा ? समस्त आलोक, चैतन्य और प्राणशक्ति, प्रभु की दी हुई है—मृत्यु के द्वारा वही इसको लौटा लेता है । जिस वस्तु को मनुष्य दे नहीं सकता, उसे ले लेने की स्पर्धा से बढ़कर दूसरा दंभ नहीं । मैं फल-मूल खाकर अंजलि से जलपान कर, तृण शय्या पर आँख बंद किए सो रहता हूँ । न मुझसे किसी को डर है और न मुझको किसी से डरने का कारण है । तुम यदि हठात् मुझे ले जाना चाहो तो केवल मेरे शरीर को ले जा सकते हो, मेरी स्वतंत्र आत्मा पर तुम्हारे देवपुत्र का भी अधिकार नहीं हो सकता ।

(ग) कितना गौरवमय आज का अरुणोदय है । भगवान सविता, तुम्हारा आलोक, जगत का मंगल करे । मैं आज जैसे निष्काम हो रहा हूँ । विदित होता है कि आज तक जो कुछ किया, वह सब भ्रम था । मुख्य वस्तु आज सामने आई । आज मुझे अपने अन्तर्निहित ब्राह्मणत्व की उपलब्धि हो रही है । चैतन्य सागर निस्तरंग है और ज्ञान-ज्योति निर्मल है । तो क्या मेरा कर्म-कुलाल-चक्र अपना निर्मित भांड उतारकर धर चुका ? ठीक

तो, प्रभा पवन के साथ सबको सुख-कामना शांति का आलिंगन कर रही हैं । देव ! आज मैं धन्य हूँ ।

(घ) जब तक साहित्य का काम केवल मन बहलाव का सामान जुटाना, केवल लोरियाँ गा-गाकर सुलाना, केवल आँसू बहाकर जी हलका करना था, तब तक इसके लिए कर्म की आवश्यकता न थी । वह एक दीवाना था जिसका गम दूसरे खाते थे, मगर हम साहित्य को केवल मनोरंजन और विलासिता की वस्तु नहीं समझते । हमारी कसौटी पर वही साहित्य खरा उतरेगा, जिसमें उच्च चिंतन हो, स्वाधीनता का भाव हो, सौंदर्य का सार हो, सृजन की आत्मा हो, जीवन की सच्चाइयों का प्रकार हो-जो हममें गति, संघर्ष और बेचैनी पैदा करे, सुलाये नहीं, क्योंकि अब और ज्यादा सोना मृत्यु का लक्षण है ।

(ङ) काव्य के विषय में और चाहे कोई सिद्धांत निश्चित न हो परन्तु उसकी रागात्मकता असंदिग्ध है । इसे पौरस्त्य और पाश्चात्य दोनों ही काव्यशास्त्र निभ्रांत रूप से स्वीकार करते हैं । कविता मानव-मन का शेष सृष्टि के साथ रागात्मक संबंध स्थापित करती है । यह एक विश्वजनीन

(घ) 'पथ के साथी' में सियारामशरण गुप्त का संस्मरणात्मक रेखाचित्र बड़ा सजीव एवं मार्मिक बन पड़ा है । स्पष्ट कीजिए ।

(ङ) ''उनकी दृष्टि में वही रहता है जो उनके हृदय में है और हृदय में वही रहता है जो वचन में।'' इस कथन के आधार पर मैथिलीशरण गुप्त के व्यक्तित्व का विश्लेषण कीजिए ।

(च) ''निराला जी विचार से क्रांतदर्शी और आचरण से क्रांतिकारी हैं ।'' 'पथ के साथी' के आधार पर इस कथन की सार्थकता सिद्ध कीजिए ।

3. निम्नलिखित लघूत्तरी प्रश्नों में से किन्हीं **पाँच** प्रश्नों के उत्तर लगभग **250** शब्दों में दीजिए : **3×5=15**

(क) भारतेन्दु हरिश्चन्द्र के नाटकों पर टिप्पणी कीजिए।

(ख) उपेन्द्रनाथ अश्क के नाटकों की भाषा-शैली का परिचय दीजिए ।

(ग) लक्ष्मीनारायण लाल की नाट्यकला पर प्रकाश डालिए ।

(घ) पात्र-योजना की दृष्टि से डॉ. शंकर शेष के नाटकों का मूल्यांकन कीजिए ।

(ङ) विष्णु प्रभाकर द्वारा रचित 'दूर और पास' नाटक के उद्देश्य पर प्रकाश डालिए ।

(च) 'कलम का सिपाही' के आधार पर सिद्ध कीजिए कि प्रेमचंद एक साहसी व निर्भीक व्यक्ति थे।

(छ) 'उत्तरयोगी' के आधार पर महर्षि अरविन्द के दार्शनिक विचारों पर प्रकाश डालिए ।

(ज) आत्मकथा के तत्वों के आधार पर 'क्या भूलूँ, क्या याद करूँ' की समीक्षा कीजिए ।

(झ) राहुल सांकृत्यायन के व्यक्तित्व और कृतित्व पर प्रकाश डालिए ।

(ञ) 'साहित्य देवता' पुस्तक का महत्त्व बताइए ।

4. सभी प्रश्नों के उत्तर अनिवार्य हैं : **1×8=8**

(क) आचार्य चाणक्य का मूल नाम क्या है ?

(ख) पंजाब का राजा कौन है ?

(ग) अलका कहाँ की राजकुमारी है ?

(घ) हमारे पुराने आर्यों का साहित्य क्या है ?

(ङ) हृदय की मुक्तावस्था क्या कहलाती है ?

(च) महादेवी वर्मा को सन् 1956 में कौनसी उपाधि मिली थी ?

(छ) 'पथ के साथी' में महादेवी वर्मा ने कितने साहित्यकारों के बारे में लिखा है ?

(ज) 'साहित्यकार संसद' की स्थापना किसने की ?